हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की महिमा हो। मैं आपको वचन पर मनन-चिन्तन करने के लिए स्वागत करता हूँ। आज हम एक और बात सीखेंगे—एक ऐसी चाल जिसे शैतान बहुतों की गति कम करने के लिए उपयोग करता है ताकि वे परमेश्वर को ढूँढ़ न पाएं।

स्पष्ट है कि हर व्यक्ति के भीतर यह प्यास होती है कि वह अपने जीवन में परमेश्वर की आवाज़ सुने—यह जाने कि उसके आसपास क्या हो रहा है, वर्तमान और भविष्य में कौन-सी चुनौतियाँ या खतरे हैं। लेकिन बहुत से लोग यह न जानने के कारण कि परमेश्वर की आवाज़ को कैसे सुना जाए, अपने सपनों के सहारे जीवन जीने लगे हैं यह मानकर कि हर सपना परमेश्वर की ओर से संदेश है।

आज मैं आपसे कहना चाहता हूँ, मेरे भाई, मेरी बहन—यदि आपके भीतर परमेश्वर की आवाज़ सुनने की प्यास है, तो जान लीजिए कि परमेश्वर की आवाज़ आपके हर रोज़ आने वाले सपनों में नहीं है। परमेश्वर की आवाज़ सुनने का एकमात्र सही मार्ग आपके भीतर बसने वाला परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर की आवाज़ बाइबल के वचन में है, न कि सपनों में!

हर सपना परमेश्वर की आवाज़ नहीं होता। बहुत से सपने हमारी रोज़मर्रा की गतिविधियों और उन बातों से आते हैं जिनसे हमारा

मन भरा हुआ रहता है।

उदाहरण के लिए—यदि आपका जीवन सांसारिक फ़िल्में देखने और दुनियावी संगीत सुनने से भरा है, तो आपके सपने भी उन्हीं बातों से भरे होंगे। यदि आपके मन में गाली-गलौज, पाप और भोगविलास भरे हों तो सपने भी वैसे ही होंगे। यदि दिन भर आप बहुत अधिक काम में लगे रहते हैं, तो सपने भी उसी से संबंधित होंगे।

सभोपदेशक 5:3
“क्योंकि अधिक काम के कारण सपने आते हैं…”

इसलिए यदि कोई व्यक्ति वचन पढ़ना छोड़ देता है और अपने सपनों के आधार पर जीवन जीने लगता है—और जो कुछ भी वह देखता है उसे ही परमेश्वर का संदेश मानने लगता है—तो ऐसा व्यक्ति बहुत आसानी से शैतान के छलावे में पड़ सकता है। क्योंकि उसने परमेश्वर की आवाज़ सुनने का सही मार्ग छोड़ दिया है और सपनों की ओर मुड़ गया है।

परमेश्वर की आवाज़ पवित्र बाइबल के वचन में है। यदि आप जानना चाहते हैं कि इस समय या भविष्य के लिए परमेश्वर आपसे क्या कह रहा है, तो बाइबल खोलिए—और आप उसी क्षण परमेश्वर की आवाज़ सुनेंगे। (निश्चित रूप से, परमेश्वर कभी-कभी सपने में भी बात करता है, पर वह बहुत कम होता है, उसकी तुलना में वह हमें अपने वचन

के माध्यम से अधिक बोलता है।)

यूसुफ के जीवन में भी, यद्यपि परमेश्वर ने उसे सपनों का वरदान दिया था, बाइबल में उसके विषय में केवल तीन बार ही सपनों का उल्लेख मिलता है। लेकिन आज लोग हर सपना जो देखते हैं, उसे तुरंत परमेश्वर का संदेश मान लेते हैं—और बाइबल को पूरी तरह भूल जाते हैं!

भाइयो और बहनो, यदि आप सपनों के आधार पर जीवन जी रहे हैं—और हर सुबह उठकर अपने सपने की व्याख्या किसी सेवक से पूछते हैं—तो जान लीजिए कि आप परमेश्वर की आवाज़ से बहुत दूर हो चुके हैं। और सपनों ने आपकी आँखें ढक दी हैं, जिससे आप सोचते हैं कि परमेश्वर हर दिन उन्हीं सपनों में आपसे बात कर रहा है। लेकिन वास्तव में परमेश्वर की आवाज़ तो ऐसी है:

मत्ती 5:21–22
“तुम ने सुना है कि प्राचीन लोगों से कहा गया था, ‘हत्या न करना,’ और जो कोई हत्या करेगा वह दण्ड के योग्य होगा।
परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा वह दण्ड के योग्य होगा…”

मत्ती 5:38–39
“तुम ने सुना है, ‘आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत।’

परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, बुरे मनुष्य का सामना न करना; परन्तु जो तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसे दूसरा भी फेर दे।”

और—

मत्ती 5:43–45
“तुम ने सुना है, ‘अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने शत्रु से बैर करना।’
परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए प्रार्थना करो;
कि तुम स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता की सन्तान ठहरो…”

ये हैं परमेश्वर की आवाज़—सीधी, स्पष्ट, जीवन बदलने वाली, और बिना किसी रहस्य के। लेकिन यदि हम अपने रोज़ के सपनों पर ही निर्भर रहने लगें और सोचें कि यही वह मार्ग है जिससे परमेश्वर बोलता है, तो हम बहुत दूर भटक जाएँगे।

इसलिए सपनों के सहारे मत जियो, बल्कि परमेश्वर के वचन के अनुसार जियो!

मरन-अथा!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp